जैसलमेर के रिलीफ स्वरुप एवम् तकनीकी पक्ष

शोधार्थी
इंदू बाला
चित्रकला विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बूँदी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

रिलीफ प्राकृतिक तथा मानवीय स्वरुप में अधिकांशतः प्राप्त होते हैं। मानवीय स्वरुप अर्थात् मनुष्य व प्रकृति के विभिन्न रुपों का प्रदर्शन इस कला द्वारा किया जाता है। रिलीफ का स्वरुप कलाकार की स्वंय की सृजनशीलता, कल्पनाशीलता तथा उसका स्वयं का दृष्टिकोण समग्र एवं रूचि के क्षेत्र के अनुसार निर्धारित होता है।

आधार के अनुसार कलाकार आकार का चयन करता है जैसे – पत्थर पर नक्काशी करना, प्लास्टर ऑफ पेरिस का प्रयोग, लकड़ी पर नक्काशी, धातु पर नक्काशी, कच्ची भित्ति पर मिट्टी के द्वारा या रिलीफ का निर्माण किया जाता है। विषयवस्तु क्या है, उसे किस पर बनाया जाना है, उसकी आकृति कितनी होगी। आकृति तथा बनावट किस प्रकार की होनी चाहिए, आकृति एक है या अनेक आकृतियों का सम्मिश्रण है। किस आकृति के किस भाग को कितना उभार प्रदान करता है तथा मानवीय संवेदनाऐं, दृष्टिकोण किस पर कितना निर्भर करता है। अतः इस प्रकार के विश्लेषण तथा विवेचना द्वारा निर्णय किया जाता है तथा कलाकार कला का निर्माण करने को तैयार होता है।

चित्र सं. 1, खम्भे पर कोणीय निर्मित रिलीफ

राजस्थान में जैसलमेर में रिलीफ के स्वरुप राजा, महाराजाओं तथा शासकों द्वारा अंकित सिक्कों तथा मोहरों पर मिलते है। इसी के साथ मंदिरों की दिवारों, मुख्य कक्ष की छत ,गुम्बद, गर्भगृह आदि में भी इस प्रकार के रिलीफ मिलते है। जैसलमेर में जैन मंदिर इसका प्रमुख उदाहरण है। राजाओं के समय के सिक्के तथा उनके लिए तैयार करने वाले छापेखाने की मोहरों आदि भी रिलीफ उदाहरण है।

जैसलमेर में लोककला रिलीफ के स्वरुपों के मिट्टी की भित्तियों को अलंकरणात्मक स्वरुप देने के लिए किया जाता है। रिलीफ चित्रण के मुख्य आधार के रुप में कोठियों, तिजोरियों तथा मन्दिरों की भित्तियों पर देखा जा सकता है। कोठियों तथा तिजोरियों को सम्पूर्ण जैसलमेर में रिलीफ अलंकरण से सजाया गया है। ये अलंकरण मिट्टी की भित्ति पर मिट्टी से भी निर्मित रेखीय रुप में बनाये गये है तथा जैसलमेर के माँडना स्वरुपों जैसे ही ज्यामितीय, कोणीय,

समान्तर आकारों का संयोजन रिलीफ चित्रण में देखा जाता है। उभारदार रेखीयरुप में ही कुछ फूल वृत्त टिपकीयों, पौधे जैसे रुपों का संयोजन देखा जा सकता है।

चित्र सं. 2, पौधे के आकार में काँच व काँच की चूड़ियों के टुकड़ों से अंलकृत रिलीफ, जैसलमेर

तकनीकी पक्ष

रिलीफ चूँकि किसी ठोस आधार पर उभर या उकेर कर बनायी गयी कृति होती है, अतः इसमें सावधानी की आवश्यकता होती है। उभार कितना, कोण, दिशा आदि के साथ ठोस आधार किस प्रकार का बना हुआ है तथा उस पर कार्य करने के लिए किस प्रकार के उपकरण औजारों की आवश्यकता होगी। उसकी प्रकृति के अनुसार उसके निर्माण के समय उसके विभिन्न पक्षों के छायांकन भाग, उभार की स्थिति आदि को सम्मिलित करते हुए सम्पूर्ण कृति का समरुपता प्रदान करना जटिल कार्य है।

तालाब की मिट्टी, ऊँट/गधे/घोड़े की लीद के प्लास्टर से ही रिलीफ स्वरुप बनाये गये है। रिलीफ को आधार क्षेत्र से ही प्लासटर द्वारा उभार कर बनाया जाता है। जो दीवार आदि के निर्माण हेतु प्रयोग किया जाता है, मिट्टी से ही उभार कर आकृतियों को स्वरुप दिया जाता है तथा कहीं–कहीं काँच आदि का प्रयोग कर रिलीफ बनाए गये है। बील भी उभरी हुई एक आकृति है, इसमें मिट्टी व खपच्चियों को गिली दीवार पर ही निर्मित करते हुए अलंकर्णात्मक स्वरुप प्रदान किया जाता है। रिलीफ में उभरे हुए तथा डूबे हुए तल का समान महत्व इन लोक अलंकरण में देखा गया है, क्योंकि गहरे तथा उभरे हुए तल से ही आकृतियों का सृजन होता है।

चित्र सं. 3, रेखीय स्वरुप में कोठी पर निर्मित रिलीफ

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

कोठारी गुलाब :

राजस्थान की ग्रामीण कलाएँ एवं कलाकार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

कृष्ण रायदास :

भारतीय चित्रकला , लीडर प्रेस, इलाहबाद।

खान.एस.आर :

हाड़ौती अंचल एवं धर्म हाड़ौती के बोलते शिल्पलेख, हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान केसर **गुप्त, मोहनलाल :**

(2009) कोटा संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थान ग्रन्थागार जोधपुर

गैरोला, वाचस्पति :

'भारतीय संस्कृति व कला, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ संस्थान, लखनऊ

गोस्वामी, प्रेमचन्द :

मनोहर माँडने, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

गोस्वामी, प्रेमचन्द (2010)

राजस्थान – संस्कृति, कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

गोस्वामी, प्रेमचन्द :

भारतीय कला के विविध स्वरुप, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

जैन, डॉ. भगवती : (1989)

हाड़ौती का पुरातत्व, शोध संस्थान प्रतिष्ठान, कोटा

भवसार, वीरसिंह :

'आदिवासी', नई दिल्ली

शर्मा, राधारानी : (2007)

'हाड़ौती की लोककला में माँडनें, नवजीवन पं. नई दिल्ली